

>

Title: Need to increase the area of cultivable land for enhancing the production of food-grains in the country.

**श्री रामजीलाल सुमन (फ़िरोज़ाबाद) :** महोदय, सब जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहां की कुल आबादी के 64 फीसदी लोग किसान हैं। देश में रबी सीजन के दौरान अक्टूबर से जनवरी तक पिछले साल की तुलना में 5 लाख 70 हजार हैक्टेयर कम भूमि पर गेहूं की बुवाई की गई है। आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि गेहूं ही नहीं तिलहन की बुवाई भी पिछले साल 96 लाख 10 हजार हैक्टेयर से घटकर 86 लाख 60 हजार हैक्टेयर पर ही हो पाई है, यानी गेहूं व तिलहन दोनों की बुवाई के क्षेत्रफल में कमी आई है। समझा जा सकता है कि पिछले वर्ष ज्यादा क्षेत्रफल पर बुवाई के बावजूद सरकार को मंहगे दामों पर विदेश से गेहूं का आयात करना पड़ा था। इस वर्ष कम क्षेत्रफल के बुवाई के बावजूद गेहूं की रिकार्ड पैदावार होगी, सरकार का यह दावा समझ से परे है।

रबी की फसल की कम बुवाई का एक कारण उत्तर प्रदेश के गन्ना मिल का समय पर न चलना रहा है। उत्तर प्रदेश में गन्ना मिल काफी देर से चले जिसके कारण खेत से गन्ना खाली कर किसान गेहूं व तिलहन की बुवाई नहीं कर पाए, क्योंकि जब तक गन्ना खेत से मिल तक गया तब तक बुवाई का मौसम निकल चुका था। कृषि क्षेत्र की ऐसी दुर्दशा राज्य की वर्तमान सरकार के नीतियों के कारण हुई, जिसका खामियाजा कर्ज से दबे निर्दोष किसानों को कम बुवाई करके भुगतान पड़ा।

अतः मैं जानना चाहता हूँ कि पिछले वर्ष से कम क्षेत्रफल पर बुवाई के बावजूद रिकार्ड पैदावार का दावा सरकार किस आधार पर कर रही है।